वह जीवन जन्म निरर्थक है जिसमें प्रभु के प्रति प्यार न हो लिरिक्स

वह जीवन जन्म निरर्थक है,
जिसमें प्रभु के प्रति प्यार न हो,
निष्फल वह विद्या बल वैभव,
जिससे जग का उपकार न हो।bd।

तर्ज – अब सौंप दिया इस जीवन का।

वैसे तो नर तन दुर्लभ है,
जिसको पाने को सुर तरसे,
धिक्कार किन्तु उस मानव को,
जो नर तन पा भव पार न हो।bd।

ऐसा अनुपम अवसर पाकर,
मत चूको फँसकर दुनिया में,
मंजिल तक कैसे पहुंच सके,
यदि सन्त चरण आधार न हो।bd।

जैसे तन की खुराक भोजन,
सत्संग आत्मा का जीवन,
सत्संगति भी वह क्या जिससे,
इस मन का दूर विकार न हो।bd।

कहीं बनी बनाई बिगड़ न जाय,
बिगड़ों के संग बनाने में,
बन सके न बिगड़ी जनम जनम,
यदि साँवरिया सा यार न हो।bd।

औरन की भूलन भटकनि लख,
तू सावधान हो ऐ कबीर,
रख नारायण प्रभु ध्यान सदा,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

वह जीवन जन्म निरर्थक है,
जिसमें प्रभु के प्रति प्यार न हो,
निष्फल वह विद्या बल वैभव,
जिससे जग का उपकार न हो।bd।

स्वर – श्री राजेन्द्रदास जी महाराज।
प्रेषक – ओमप्रकाश पांचाल।
9926652202

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com